E-Learning Study Material
By- Prof(Dr) YADWENDRA SINGH
Subject – Economics
MAHARAJA COLLEGE, ARA
V.K.S. University, ARA, BIHAR
B.A. Economics Hons Third Year

Q- औद्योगिक क्रान्ति (Industrial Revolution) के परिणाम स्वरूप विभिन्न अर्थव्यवस्थाओं के विभिन्न वर्गों पर पड़ने वाले प्रभावों की व्याख्या करें।

Scanned with CamScanner

औद्योगिक क्रान्ति ने अपने प्रभाव से ब्रिटेन का
आर्थिक और सामाजिक स्वरूप ही बदल दिया।
दूसरे शब्दों में, वैज्ञानिक प्रगति एवं विभिन्न नयी नयी
तकनीकों के आविष्कार के फलस्वरूप कृषि एवं
औद्योगिक उत्पादन, आर्थिक विस्तार और जीवन
की स्थितियों में बदलाव आया।
शहरी क्षेत्रों के जाल में बदलाव देखने को मिले
जहाँ ग्रामीण स्तर पर कृषि, उद्योग एवं
शिपिंग में प्रगति के बाद शहरी क्षेत्र और
औद्योगिक स्वरूप का ही सदा जिसके क्षेत्रों
में ध्यान गया हुआ और देश में विकसित
आवश्यकता महसूस
बैंकिंग व्यवस्थाओं की
की गयी

कृषि विकास :- ब्रिटेन की कृषि काफी विकसित थी
या यूं कहें कि 18वीं सदी से पूर्व से ही कृषि
आधारित अर्थव्यवस्था कायम थी।
नई कृषि प्रणालियों ने एक कृषि क्रान्ति का
निर्माण किया जिसने बढ़ती आबादी को
खिलाने के लिए बड़ी मात्रा में विभिन्न
फसलों का उत्पादन किया। 19वीं सदी
के प्रारम्भ में भूमि का राजनीतिक एवं
आर्थिक महत्व बहुत अधिक था। अभिजात-
वर्ग और देश के अधिकांश भाग के मालिक
और उनके किरायेदार खेती के साथ विभिन्न
पशु-भेड़ पालन आदि का कार्य करते थे।

Scanned with CamScanner

औद्योगिक विकास :- 18वी शताब्दी के मध्य तक जनसंख्या वृद्धि एवं बढ़ते विदेशी व्यापार से निर्मित वस्तुओं की मांग में व्यापक वृद्धि हुई। पानी और पशु शक्ति को भाप की शक्ति से बदलने के पश्चात नई मशीनरी और प्रौद्योगिकी के विकास द्वारा बड़े पैमाने पर उत्पादन होने लगा। स्टीम इंजन के लिए जेम्सवाट के सुधार और रोटरी इंजन के निर्माण पर मैथ्यू बोल्टन के साथ उनका सहयोग औद्योगिक उत्पादन के लिए महत्वपूर्ण थे। औद्योगिकरण की सफलता में कोयला एक महत्वपूर्ण कारक बन गया इसका उपयोग वाष्प (Steam) की शक्ति का उत्पादन करने के लिए किया जाता था। जिस पर उद्योग का संचालन निर्भर करता है) खनन प्रौद्योगिकी में सुधार के पश्चात कारखानों को बिजली देना और रेल गाड़ियों एवं स्टीमर चलाने के लिए खानों से अधिक कोयला निकालना संभव हो सका। ब्रिटेन के कपड़ा एवं धातु उद्योग विश्व स्तर पर महत्वपूर्ण हो गये साथ ही कांच, साबुन और मिट्टी के बर्तनों का भी निर्माण प्रचुर मात्रा में हुआ साथ ही धातु से बने समानों निर्यात हुआ।

जहाजनिर्माण एवं समुद्री व्यापार :- एक विकसित द्वीप के रूप में ब्रिटेन हमेशा अपने समुद्री व्यापार पर निर्भर रहा है। औद्योगिक क्रान्ति के साथ उत्पादों के वितरण के रूप में जहाजरानी का

महत्व बढ़ गया और लोगों के आवागमन में एक वृद्धि हुई। तटीय, विदेशी एवं गुलाम देशों ने जहाजरानी उद्योग पर नई शर्तें रखी और तटीय शहरों में रोजगार और प्रवाह धन लाया गया। बाद में जहाजों के लकड़ी भाप से चलने के साथ इंजन चालित नौकाओं की भी नहरों व नदियों में उतारा गया जिससे बाजारों के साथ व्यापार मार्गों का भी विकास हुआ।

इस्पात लोकोमोटिव में वाष्प इंजन को अपनाने के साथ माल का परिवहन तेज, आसान सस्ता और अधिक विश्वसनीय हो गया। रेलवे ने काफी विकास किया। इसका विस्तार एवं नये रेलवे कनेक्शनों ने तटीय शहरों के साथ साथ पहले के दूरस्थ और पृथक प्रांतीय शहरों को भी बढ़ावा दिया। बेहतर सड़कों का निर्माण किया गया था। नये लोहे के पुल उन क्षेत्रों में बनाये गये थे जहाँ पहले आवागमन की समुचित व्यवस्था नहीं थी। इसके बाद कच्चेमाल की आपूर्ति भारत जैसे गुलाम देशों से चालू हो गयी भारतीय धन का लूट खसोट से पूँजी की प्राप्ति हुई तथा ब्रिटेन के उद्योगों एवं बाद में ब्रिटिश प्रशासन द्वारा गुलाम देशों में स्थापित उद्योगों के उत्पादों के लिए बाजार मिला और गुलाम देश के पारंपरिक उद्योग धीरे धीरे बन्द होने लगे जिसका गुलाम देशों की अर्थव्यवस्था पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ा।

Scanned with CamScanner